श्री आनंद कल्याण

वि.सं. २०७३ - भादरवा वद - १२ • दि. २९ अगस्त, २०१६ • अंक-४

4

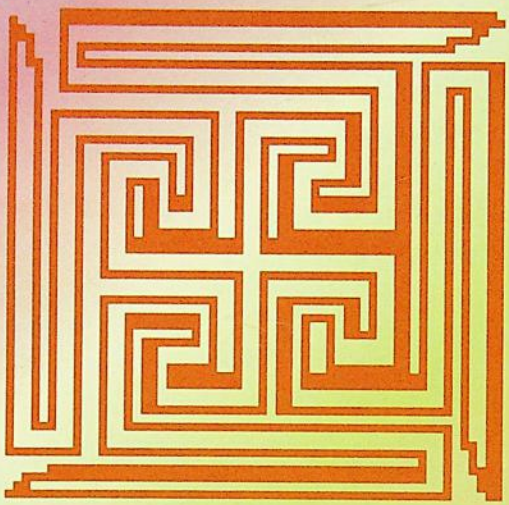

शेठ आणंदजी कल्याणजी
अहमदाबाद

श्री शत्रुंजय तीर्थाधिपति

श्री आदिनाथ दादा की ५००वीं सालगिरह

के उपलक्ष में

५००वीं सालगिरह का प्रसंग

संवत २०८७ वैशाख वद-६, सोमवार दिनांक १२-०५-२०३१

शेठ आणंदजी कल्याणजी पेढी

द्वारा प्रस्तुत लाभ लेने का सुवर्ण अवसर.....

"सुवर्ण महोत्सव प्रसंग पर आयोजित सर्व साधारण फंड"

१५ साल बाद आनेवाले

सुवर्ण महोत्सव में हमारा लाभ क्यों न हो ?

बस ! आज से सिर्फ १ रुपया प्रति दिन

१ साल के रु. ३६०, १५ साल के रु.५४००.

'शेठ आणंदजी कल्याणजी' के नाम का एकाउन्ट पेयी चैक / नकद भारत की किसी भी एच.डी.एफ.सी. बैंक की शाखा में सेविंग्स एकाउन्ट नं. 50100165224400 में जमा की जा सकेगी। चैक जमा कराने के बाद पे-इन-स्लीप ट्रस्ट के अहमदाबाद के पते पर अपना नाम, पता, मोबाईल नंबर, ई-मेईल सहित फोर्म भरके भेज कर दान की रसीद अवश्य ले लें।

इस हेतु फोर्म शेठ आणंदजी क्याणजी ट्रस्ट संचालित सभी तीर्थो में उपलब्ध है। इस के अलावा www.anandjikalyanjipedhi.org वेबसाईट प से भी डाउनलोड कर सकेंगे।

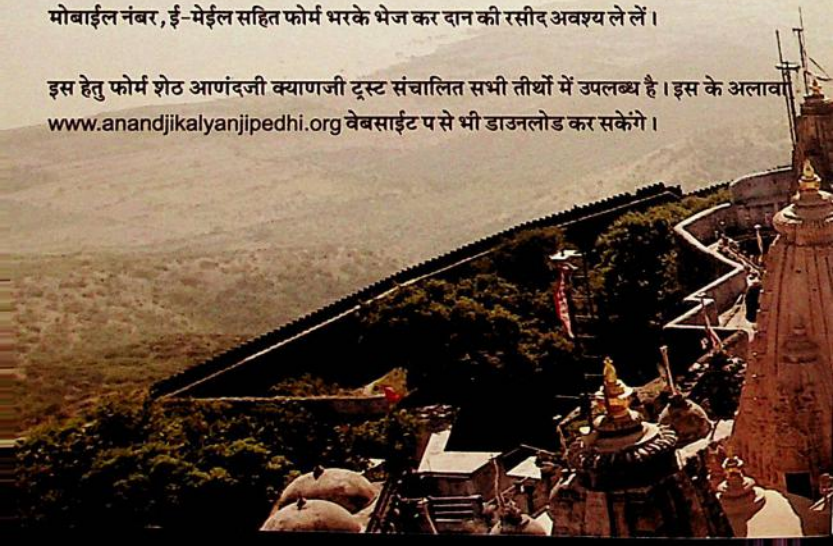

"श्री आनंद कल्याण" (त्रिमासिक पत्र)

(धार्मिक धर्मादा ट्रस्ट रजि नं. ए-१२९९/अहमदाबाद)

वर्ष : २ अंक : ४ कीमत : ₹ २० वार्षिक शुल्क : ₹ १००

खमियव्वं । क्षमा मांग लो
खमावियव्वं । क्षमा दे दो
उवसमियव्वं । स्वयं उपशांत बन जाओ
उवसमावियव्वं । अन्यको उपशांत बना दो ।

जो उवसमई तस्स अत्थि आराहणा
जो उपशांत बनता है, शांत रहता है,
वही आराधक है, उसकी आराधना सार्थक है ।

जो न उवसमई तस्स नत्थि आराहणा ।
जो उपशांत होता नहीं है, वो आराधक नहीं है ।
उसकी आराधना निरर्थक है

तम्हा अप्पणा चेव उवसमियव्वं ।
हमे अपने आप को उपशांत बनाना है ।
हमे स्वयं शांत होना है ।

'उवसम सारं खु सामण्णं'
उपशांत भाव, उपशमभाव वही श्रामण्य का सार है ।
और साधना की फलश्रुति है ।

: प्रकाशक :

शेठ आणंदजी कल्याणजी

श्रेष्ठी लालभाई दलपतभाई भवन,

२५, वसंतकुंज, नवा शारदा मंदिर रोड, पालडी, अहमदाबाद-३८० ००७.

श्री आनंद कल्याण (त्रैमासिक पत्र)

वर्ष : २ अंक : ४

प्रकाशन

वि.सं. २०७३, भादरवा वद-१२ • ता. : २९-०८-२०१६, सोमवार

प्रकाशक

महेन्द्र शाह (जनरल मेनेजर)

शेठ आणंदजी कल्याणजी ट्रस्ट

श्रेष्ठी लालभाई दलपतभाई भवन,

२५, वसंतकुंज, नवा शारदा मंदिर रोड़, पालडी, अहमदाबाद-३८०००७

दूरभाष : 26644502 – 26645430

E–mail : shree_sangh@yahoo.com / info@anandjikalyanjipedhi.com

मुद्रक :

नवनीत प्रिन्टर्स (निकुंज शाह) मोबाईल : ९८२५२६११७७

आनंद कल्याण मेगजीन परिवार की

और से आप सभी को अंतःकरण

पूर्वक क्षमापना के साथ

मिच्छामि दुक्कडं

दि. २६-३-२०१६ के दिन पारणाभवन (पालीताणा) स्थित आयोजित तपागच्छीय श्रमण संमेलन के पूर्व दिन की स्वागत यात्रा में तपागच्छीय श्रमण संमेलन नियुक्त श्रावक समिति की और से उपस्थित शेठ आणंदजी कल्याणजी पेढी के प्रमुख श्री संवेगभाई लालभाई का शुभेच्छा वक्तव्य

परम पूज्य गच्छाधिपति आचार्य भगवंत, पूज्य आचार्य भगवंत,
पूज्य पदस्थ मुनि भगवंत और मुनि भगवंत
एवम् श्री संघ के मेरे साधार्मिक भाईयों ।

सम्मेलन के इस शुभ प्रसंग पर आप सभी को वंदन एवम् अभिनंदन पूर्वक स्वागत करते हुए मुझे बडी खुशी होती है ।

शाश्वत तीर्थ शत्रुंजय गिरिराज और आदीश्वर दादा की छत्रछाया में हजारों पूज्य साधु-साध्वीजी एवम् लाखों श्रावक-श्राविकाएं और श्रद्धालु भक्तजनों के पावन चरणों से समृद्ध धरती पर इस श्रमण प्रमुख चतुर्विध संघ का मिलन सम्मेलन के रुप में शायद पहली बार हुआ है । यह पल धन्य है । यह क्षण पुण्यवती है ।

वीतराग सर्वज्ञ परमात्मा श्रमण भगवान महावीर के मार्ग को समर्पित त्यागी-वैरागी-श्रमण श्रमणी भगवंत एवम् बडी मात्रा में उपस्थित इस सकल श्री संघ को देखकर हृदय आनंदित हो उठता है । ऐसा द्रश्य भी महान पुण्योदय से देखने को मिलता है ।

समग्र जिनशासन के संचालन की जिम्मेदारी तीर्थंकर भगवंतों की अनुपस्थिति में 'तित्थयर समो सूरि' जैसे पंचाचार को समर्पित, छत्तीस गुणों से अलंकृत आचार्य भगवंतों के शिर पर है। उनके असीम शास्त्रज्ञान, गहरे आत्मज्ञान एवम् उच्च त्याग-तपोमय व्यक्तित्व के आगे हम बालक के समान लगते है। फिर भी कुछ धृष्टता कर के भी मन की बातें करने का साहस कर रहा हूं।

चतुर्विध संघ के हर एक विभाग में परस्पर वात्सल्य भाव, प्रेमभाव, मैत्रीभाव बढे यह आज की बडी आवश्यकता है। हमारी आपसी असहनशीलता हमें कई क्षेत्रों में पीछे धलेकती है। कमजोर साबित करती है। प्रश्न कई है। सकल श्री संघ आप सभी की और से समुचित मार्गदर्शन की इच्छा रखता है।

तीर्थों के संरक्षण, व्यवस्थापन, कुछ स्थानों में कानूनी विवाद, कुछ स्थानों में संचालन के प्रश्न, कुछ स्थानो में सकल श्री संघ की उपेक्षा कर के व्यक्तिगत प्रभाव और सामर्थ्य के जोर पर नुकसान हो ऐसी प्रवृत्तियां। इस सब के लिये कुछ सोचना पड़ेगा।

श्री संघ के संचालन में अनुभव, प्रौढ़ता, परिपक्वता एवम् दीर्घदर्शिता के अभाव में व्यक्तिगत अनबन से क्षुब्ध वातावरण दूर हो यह आवश्यक है। श्री संघ में, सम्यग्दर्शन के आचार उपबृंहणा-अनुमोदना को बढाने की काफी आवश्यकता है। जिससे परस्पर सद्भाव एवम् प्रमोदभाव बढ़े।

चतुर्विध संघ के विभिन्न कार्य, जिम्मेदारियां, आयोजन, अनिवार्य प्रवृत्तियां इत्यादि के लिये साधारण द्रव्य की हंमेशा कमी रहती है।

संघ की विभिन्न संस्थाओं को एक दूसरे के प्रतिस्पर्धी नहीं किन्तु एक दूसरे के पूरक बन कर चलना चाहिए। जो संघ की एकवाक्यता के लिए अति आवश्यक है।

श्री संघ के कमजोर क्षेत्रों को सक्षम् एवम् समृद्ध बनाने हेतु सफल आयोजन करने का समय सामने खडा है ।

साधारण द्रव्य के फंड हेतु सभी को योगदान देना होगा । आप पूज्य को इसके लिये शास्त्रोचित एवम् समयोचित प्रेरणा भी करनी होगी । मार्गदर्शन देना होगा । आज धर्मद्रव्य व्यवस्था बदलने की आवश्यकता नहीं है, गुरुदेवों की और से सकल श्री संघ को प्रेरणा दे कर कमजोर क्षेत्रों की और दान बढे, वैसी प्रवृत्तिओं में लाभ लेने की प्रेरणा देनी होगी ।

प्रभु शासन के पुण्योदय से त्याग-वैराग्य के मार्ग की अपूर्व महिमा आज के विलासी एवम् भौतिकता में मचलते युग में भी काफी बढी है, इसके लिये हम ही नहीं समग्र विश्व आश्चर्यचकित हो रहा है । पर साथ ही श्रमण-श्रमणी संघ के योगक्षेत्र के लिये, आराधना-साधना और अध्यात्म के विकास के लिये विहारो में हो रहे अकस्मात इत्यादि अनेक प्रश्नों के समाधान खोजने होंगे । साध्वीजी वर्ग की सुरक्षा के बारे में भी अनदेखी नहीं की जा सकती ।

अन्य समाज के साथ परस्पर आदरभाव, सहृदयता और सहअस्तित्व की भावना जागृत करनी होगी । संघर्ष का रास्ता नुकसानकर्ता होगा, ऐसा मेरा विनम्र मंतव्य है । अन्य सम्प्रदाय, गच्छ, वर्ग एवम् समूह के साथ कुछ ज्यादा सहिष्णुता रखनी होगी । बात बात पर या आये दिन आमने सामने हो जाने की मनोवृत्ति नुकसानकर्ता और मेरे नजरिये से आत्मघाती सिद्ध होगी ।

समाज के अन्य वर्ग के साथ संवादिता, समझ और समादरपूर्ण व्यवहार के लिये सक्षम श्रावक वर्ग, मजबूत श्रेष्ठि परम्परा, महाजन परम्परा को पुनर्जीवित करनी होगी । उसे सुद्रढ भी बनानी होगी ।

हमारे पास ज्ञानी-ध्यानी, त्यागी, तपस्वी एवम् होनहार शासन प्रभाव आचार्य भगवंत, मुनि भगवंत और श्रमणी भगवंत की उत्कृष्ट परम्परा रही है।

ऐसी ही शासन को समर्पित, संघ वात्सल्य और संघभक्ति से भरे व्यक्तित्ववाले राजा, मंत्री और श्रेष्ठिओं की भी बडी परम्परा रही है। ऐसे कई श्रावकश्रेष्ठ के अवतार आज के हमारे श्री संघ में तैयार करने होंगे। निसंदेह प्रभु का शासन अविच्छिन्न रहेगा ही, फिर भी उसमें हमे भी ठोस योगदान देना होगा।

इन सभी महानुभावों ने शासन भक्ति के साथ तत्कालीन समाज के सभी वर्गों के हृदय जीत कर, उनके दुःखदर्द एवम् प्रश्नों के सहभागी बन कर महाजन का गौरवशाली मान प्राप्त किया था। उचित स्थान बनाया था। समाज के सभी वर्गों के साथ आदर-मान एवं सहअस्तित्व के भाव के साथ ही पारस्परिक सहिष्णुता कायम होगी।

किसी भी प्रश्न पर खुलेआम सरकार के सामने आ जाने से समाधान की जगह परेशानी बढेगी। आपस में बातचीत के माध्यम से प्रश्न हल करना ज्यादा उचित रहेगा।

समझदार वर्ग दूर होता जा रहा है, इसके अलावा हमारे लम्बे कार्यक्रम, बहुमान के प्रसंग, प्रसंगो में अनावश्यक धन राशि का व्यय होना इत्यादि, उसकी जगह अनुकंपा, जीवदया, प्राणीदया, मानव करुणा के झरने बहाने की अति आवश्यकता है। कहीं ये झरनें सूख न जाय। दंभ, अनबन और प्रदर्शन की वृत्ति के रेगिस्तान में शोषित ना हो .य, यह देखना होगा।

आज श्रावक-श्राविका की समर्पित... का मापदंड उनके द्रव्य के व्यय पर होता है। तो क्या जो श्रावक-श्राविका अपने पास कम लक्ष्मी के कारण द्रव्य का व्यय ना कर सके तो उनकी समर्पितता कम मानी जायेगी ? यहाँ हमें शत्रुंजय के जीर्णोद्धार में भीमा कुंडलीया का दृष्टांत याद करना चाहिए।

जिनप्रतिमाजी को निर्माण में नवप्रयोगों के नाम पर कई ऐसे प्रयोग हो रहे है जो प्राचीन शिल्प-स्थापत्य की अवधारणा को नुकसानकर्ता होगें।

लांछन पर ही सीधे प्रतिमाजी बिराजमान कराने से सामान्य व्यक्ति को लांछन की जगह वह प्रभु का वाहन लगेगा ।

जीर्णोद्धार के नाम से प्राचीन कला स्थापत्य का नाश करके, परम्परागत विरासत का नाश कर के सब कुछ नया कर देने के प्रयत्नों से प्राचीनता, ईतिहास, सबूत काफी कुछ नष्ट हो जायेगा । स्थापत्य के अवशेष, परमात्मा एवं देव-देवियों के बिंब, ज्ञान के ग्रंथ, पट, छोड (चंदरवा, पिछवई) उपकरण सब सुशोभन के रुप में करोडों के दाम पर आज देश में एवं देश के बहार बेचे जा रहे है और अच्छी खासी आशातना हो रही है । ऐसा भविष्य में ना हो उसके लिये खास ध्यान केन्द्रित करना आवश्यक है और आपका मार्गदर्शन श्री संघ को देना आवश्यक है ।

प्राचीन तीर्थभूमिओं, कल्याणकभूमिओं के नाम पर शहरों के पास या हाईवे पर या अन्य स्थल पर मंदिर व तीर्थ बनाने से भविष्य की पीढी को वास्तविक तीर्थों के लिये भ्रांति पैदा होगी जो शायद नुकशानकर्ता बन जाएगी ।

हर एक छोटी-बडी संस्थाएं, समूह, मंडल, ग्रुप वगैरह वाकई अपने अपने तरीके से कार्य करें किन्तु चतुर्विध संघ की मर्यादा को तो अबाधित रुप से स्वीकार करना ही होगा । संघ व्यवस्था गौण बन कर ना रह जाय, यह देखना होगा । व्यक्तिगत बडे कार्यक्रम, अनुष्ठान ईत्यादि उक्त शहर या गाँव के स्थानीय संघ को गौण बना दे, यह उचित नहीं है । संघ की व्यवस्था बनी रहे यह अति आवश्यक है ।

आप सब कई कष्ट सहन कर के भी यहाँ पधारे है, यह हम सब का प्रबल पुण्योदय है एवं गौरव का विषय है ।

फिर से एकबार चतुर्विध श्री संघ के चरणों में कोटि कोटि वंदन के साथ वीतराग की आज्ञा के विरुद्ध कुछ कह दिया हो तो **"मिच्छा मि दुक्कडं"**

दि. ३-४-२०१६ के दिन पारणाभवन (पालीताणा) स्थित आयोजित तपागच्छीय श्रमण संमेलन फलश्रुति उद्घोषणा महासभा में तपागच्छीय श्रमण संमेलन नियुक्त श्रावक समिति की और से उपस्थित शेठ आणंदजी कल्याणजी पेढी के प्रमुख श्री संवेगभाई लालभाई का अनुमोदनीय वक्तव्य

परम पूज्य गच्छाधिपति आचार्य भगवंत, पूज्य आचार्य भगवंत, पूज्य पदस्थ मुनि भगवंत, पूज्य मुनि भगवंत और पूज्य साध्वीजी भगवंत एवं साधार्मिक भाईयों और बहनों ।

परम तीर्थपति श्रमण भगवान महावीरस्वामी का धर्मशासन आज भी जयवंत है इसका कारण है: चतुर्विध संघ की निष्ठा । श्रद्धा एवम् भक्तिभाव से युक्त समर्पण का भाव ।

उसमें भी पूज्य श्रमण-श्रमणी भगवंत की त्याग-तपोमय सर्वविरति मार्ग की अनन्य उपासना एवं श्रावक श्राविका रुप संघ की एवं श्रद्धालुजनों की यथाशक्य देशविरतिरुप धर्म की आराधना के बल से प्रभु का शासन जग में गूंज रहा है ।

हम सब का परम सद्भाग्य है, अपूर्व पुण्योदय है कि तपागच्छ की परम्परा के महान ज्ञानी-ध्यानी-त्यागी-तपस्वी आचार्य भगवंत जिनशासन की धुरा का वहन करते है ।

शासन को सुद्रढ बनाने के लिये समय समय पर देश-काल-पुरुष-अवस्था-राज्यसत्ता, सामाजिक परिप्रेक्ष्य ईत्यादि को विवेचित कर के सापेक्ष

भाव से कल्याणकारी सूचन करते है, राह दिखाते है । वह आप पूज्यों का महान उपकार है ।

शत्रुंजयगिरि की तलेटी में, पालीताणा की पुण्यमयी धरती के आंगन में सम्मेलनरुप अपूर्व अवसर आया है । दि. २६-३-१६ से दि. २-४-१६ तक चले सम्मेलन में आप सब पूज्य साथ बैठे, सहर्चिंतन किया, विचारों का आदान-प्रदान किया ।

शास्त्र परम्परा, प्रणालिका एवम् वर्तमान में परिवर्तित देशकाल को सामने रख कर परम पूज्य गुरुभगवंतों ने जो निर्णय किये है, वह सम्पूर्णतः शासन के हित में ही किये है ।

परम पूज्य गुरुभगवंत तो प्रभु द्वारा दिखाये गये मार्ग पर अविरत ज्ञान-ध्यान में लीन रहते है, अपने स्वाध्याय में, तप-तितिक्षा में डूबे रहते हैं । शासन-संघ-समुदाय एवं अनुयायिओं के योगक्षेम को वहन करते हुए उन्होंने प्रभु के प्रति, प्रभु द्वारा दिखाये गये मार्ग के प्रति पूर्ण अहोभाव एवं सकल श्रीसंघ के प्रति अपना वात्सल्यभाव दर्शाते हुए कीमती समय दिया है, चिंतन, मनन एवम् विश्लेषण किया है ।

श्रमण संघ के समुत्थान में ही सकल संघ का उत्थान संलग्न है, यह सभी को याद रखना है ।

व्यक्तिगत तौर पर जितना हो सके उतना स्वयं पालन करें ।

व्यक्तिगत नही किन्तु संघीय बातों के पालन में सहयोगी बनें ।

जो कुछ शुभ हो रहा है, उसकी भरपुर अनुमोदना करें, किन्तु किसी गलत वाद विवाद चर्चा-टीका टीप्पणी से हंमेशा दूर रहें ।

कल दोपहर सर्वमंगल करने से पहले परम पूज्य आचार्य भगवंत पद्मसागरसूरीश्वरजी महाराज साहब ने जो बात की, उससे मुझे अति आनंद हुआ कि, "पहले की तरह जैन संघ एक बने, पहले जैसी शासन की गरिमा एवम् प्रतिभा बनी रहे, शासन प्रभावना हो", एक वाक्य में उन्होंने सब कुछ

कह दिया । अन्य गुरुभगवंत जो उपस्थित थे या अनुपस्थित थे, उनका भी यही सुर था । इसके अलावा परम पूज्य पद्मसागरसूरीश्वरजी ने समग्र मूर्तिपूजक श्री संघ का सम्मेलन हो, ऐसी उमदा भावना व्यक्त की । यह है, इन सभी पूज्यों का परमात्मा एवम् उनके द्वारा प्ररुपित धर्म के प्रति अहोभाव, हृदय की उदारता और शासन के प्रति प्रेम और भावना ! इन पूज्यों को नमन करे उतने कम है ।

मेरा प्रबल पुण्योदय है कि, मुझे परमात्मा एवम् धर्म की शरण मिली और उनकी धुरा का वहन करने वाले ऐसे पूज्य गुरुभगवंतों की निश्रा, आशीर्वाद एवम् मार्गदर्शन मिले है और भविष्य में भी मिलते रहेंगे । ऐसी आशा रखता हूं ।

श्री श्रमण संघस्य शांतिर्भवतु ।

श्री सकल संघस्य शांतिर्भवतु ।

इस अवसर पर मुझे "मंगल दिये" की अंतम कडी बोलना उचित लगता है ।

"अम घेर मंगलिक तुम घेर मंगलिक
मंगलिक चतुर्विध संघ ने होजो"

जिन शासन के सर्व चतुर्विध संघ को भावपूर्वक बार बार वंदन करता हूँ । परमात्मा की आज्ञा के विरुद्ध अनजाने में भी कुछ कह दिया हो तो त्रिविध त्रिविध रुप से "मिच्छा मि दुक्कडं"

पूज्य साधु साध्वीजी भगवंतों की वैयावच्च सेवा-भक्ति हेतु पेढी के मुख्य कार्यालय में वैयावच्च विभाग कार्यरत है ।

उपधि-उपकरण से लेकर दर्शन-ज्ञान-चारित्र की आराधना में उपयोगी सभी सामग्री अर्पण करके पूज्य श्रमण-श्रमणी भगवंतों की भक्ति पेढी की तरफ से की जाती है ।

दि. २-४-२०१६ के दिन महाराष्ट्रभवन (पालीताणा) स्थित आयोजित श्रमण संमेलन में शेठ आणंदजी कल्याणजी पेढी के प्रमुख श्री संवेगभाई लालभाई का वक्तव्य

पूज्य गुरुभगवंत के चरणों में कोटि कोटि वंदन करके मै आप सभी के प्रणाम करता हूं।

हमारा परम सद्भाग्य है कि प्रभु महावीरदेव के धर्म शासन की धुरा को वहन करनेवाले आचार्य भगवंतों का मार्गदर्शन सकल संघ के हित एवं कल्याण के लिए मिलता रहता है।

मेरे कुछ विचार इस प्रसंग पर मैं आपके समक्ष रखता हूं।

श्री संघ के संचालन में अनुभव, प्रौढता, परिपक्वता एवम् दीर्घदर्शिता के अभाव में व्यक्तिगत अनबन से क्षुब्ध वातावरण दूर हो यह आवश्यक है। श्री संघ में, सम्यग्दर्शन के आचार उपबृंहणा- अनुमोदना को बढाने की काफी आवश्यकता है। जिससे परस्पर सद्भाव एवम् प्रमोदभाव बढे।

संघ की विभिन्न संस्थाओं को एक दूसरे के प्रतिस्पर्धी नहीं किन्तु एक दूसरे के पूरक बन कर चलना चाहिए।

श्री संघ के कामजोर क्षेत्रों को सक्षम् एवम् समृद्ध बनाने हेतु सफल आयोजन करने का समय सामने खडा है।

चतुर्विध संघ के विभिन्न कार्य, जिम्मेदारियां, आयोजन, अनिवार्य प्रवृत्तियां इत्यादि के लिये साधारण द्रव्य की हंमेशा कमी रहती है।

साधारण द्रव्य के फंड हेतु सभी को योगदान देना होगा। आप पूज्य को इसके लिये शास्त्रोचित एवम् समयोचित प्रेरणा भी करनी होगी। मार्गदर्शन

देना होगा। आज धर्मद्रव्य व्यवस्था बदलने की आवश्यकता नहीं है, गुरुदेवों की और से सकल श्री संघ को प्रेरणा दे कर कमजोर क्षेत्रों की और दान बढे, वैसी प्रवृत्तिओं मे लाभ लेने की प्रेरणा देनी होगी।

समाज के अन्य वर्ग के साथ संवादिता, समझ और समादर पूर्ण व्यवहार के लिये सक्षम श्रावक वर्ग, मजबूत श्रेष्ठि परम्परा, महाजन परम्परा को पुनर्जीवीत करनी होगी। उसे सुद्रढ भी बनानी होगी।

अन्य समाज के साथ परस्पर आदरभाव, सहृदयता और सहअस्तित्व की भावना जागृत करनी होगी। संघर्ष का रास्ता नुकसानकर्ता होगा, ऐसा मेरा विनम्र मंतव्य है। अन्य सम्प्रदाय, गच्छ, वर्ग एवम् समूह के साथ कुछ ज्यादा सहिष्णुता रखनी होगी। बात बात पर या आये दिन आमने सामने हो जाने की मनोवृत्ति नुकसानकर्ता और मेरे नजरिये से आत्मघाती सिद्ध होगी।

हमारे पास ज्ञानी-ध्यानी, त्यागी, तपस्वी एवम् होनहार शासन प्रभाव आचार्य भगवंत, मुनि भगवंत और श्रमणी भगवंत की उत्कृष्ट परम्परा रही है। ऐसी ही शासन को समर्पित, संघ वात्सल्य और संघभक्ति से भरे व्यक्तित्ववाले राजा, मंत्री और श्रेष्ठिओं की भी बडी परस्पर रही है। ऐसे कई श्रावकश्रेष्ठि के अवतार आज के हमारे श्री संघ में तैयार करने होगें। निसंदेह प्रभु का शासन अविच्छिन्न रहेगा ही, फिक भी उसमें हमे भी ठोस योगदान देना होगा।

शासन भक्ति के साथ तत्कालीन समाज के सभी वर्गो के हृदय जीत कर, उनके दुःखदर्द एवम् प्रश्नों के सहभागी बन कर महाजन का गौरवशाली मान प्राप्त किया था। उचित स्थान बनाया था।

अनुकंपा, जीवदया, प्राणीदया, मानव करुणा के झरने बहाने की अति आवश्यकता है।

आज श्रावक-श्राविका की समर्पितता का मापदंड उनके द्रव्य के व्यय पर होता है। तो क्या जो श्रावक-श्राविका अपने पास कम लक्ष्मी के कारण द्रव्य का व्यय ना कर सके तो उनकी समर्पितता कम मानी जायेगी? यहां हमें शत्रुंजय के जीर्णोद्धार में भीमा कुंडलीया का द्रष्टांत याद करना चाहिए।

जीर्णोद्धार के नाम से प्राचीन कला स्थाप्त्य का नाश करके, परम्परागत विरासत का नाश कर के सब कुछ नया कर देने के प्रयत्नों से प्राचीनता, ईतिहास, सबूत काफी कुछ नष्ट हो जायेगा। स्थापत्य के अवशेष, परमात्मा एवं देव-देवियों के बिंब, ज्ञान के ग्रंथ, पट, छोड (चंदरवा, पिछ्वई) उपकरण सब सुशोभन के रुप में करोडों के दाम पर आज देश में एवं देश के बहार बेचे जा रहे है और अच्छी खासी आशातना हो रही है। ऐसा भविष्य में न हो उसके लिये खास ध्यान केन्द्रित करना आवश्यश्क है और आपका मार्गदर्शन श्री संघ को देना आवश्यक है।

एक विनति करने की धृष्टता बारबार कर रहा हूं : सकल श्री संघ की एकता और एकवाक्यता की पगडंडी को और ज्यादा कंटीली न बनाए, उसे आपसी संवाद के जरिये साफ-सुथरी रखें। उस पगडंडी के द्वारा ही सभी साथ मिलकर जिनशासन की उन्नति के राजमार्ग तक पहुंचना है। इस हेतु श्री संघ में एकवाक्यता स्थापित हो यह अति आवश्यक है। इस के लिए हमारा पुण्यबल बढाना भी जरुरी है।

'सवि जीव करुं शासन रसी' के साथ 'सभी जीवों में समता - मैत्री बढती रहे' की भावना को साकार बनाए। फिर एकबार चतुर्विध श्री संघ के चरणों में कोटि कोटि वंदन के साथ वीतराग की आज्ञा के विरुद्ध कुछ कहा हो तो 'मिच्छा मि दुक्कडं' के साथ मेरा वक्तव्य पूर्ण करता हूं।

संवेग रंगशाला ग्रंथ : एक परिचय

ग्रंथ नाम : संवेग रंगशाला

ग्रंथ कर्ता : आचार्यश्री जिनचंद्रसूरिजी

ग्रंथ श्लोक संख्या : १००५३

ग्रंथ कर्ता के गुरु : वज्र शाखा में हुए
आचार्यश्री बुद्धिसागरजीसूरिजी

ग्रंथ कर्ता के गुरुबंधु : नवांगीवृत्तिकार
आचार्यश्री अभयदेवसूरिजी

ग्रंथ रचना वर्ष : वि.सं. ११२५

ग्रंथ रचना स्थल : नगर-छत्रावली, (श्रेष्ठि पासनाग की बस्ती - जगह में)

ग्रंथ संशोधन/संमार्जन : श्री गुणचंद्रगणी/श्री जिनवल्लभगणी

ग्रंथ का ताम्रपत्र लेखन : १२०३ में जेठ सुद १४, गुरुवार के दिन श्री वटवादर नगर में

ग्रंथ का आलेखन (लिपिबद्ध) : श्री जिदत्तगणि

ताडपत्र आलेखन के लाभार्थी : पाटण के भिल्लमाल गोत्रीय आनंदर महत्तर और उनकी पत्नी राजीनी

'कच्छ के महाराजा महासेन जो श्रमण भगवान महावीर के हाथों दीक्षित हो कर महासेनमुनि बने । प्रभु के निर्वाण के बाद उनकी बिनती के प्रत्युत्तर स्वरुप परम गुरु गौतमस्वामी ने श्रमण एवं गृहस्थ वर्ग के लिये शिवपथ के परमपथ रुप ज्ञान-दर्शन-चारित्र-तपरुप चार आराधनाएं बतायी,' यह बात प्रस्तुत ग्रंथ में ग्रन्थकर्ता आचार्य श्री जिनचन्द्रसूरिजी ने आगम के अनुसार यहाँ पर विवेचित की है । यह समग्र आराधना संवेग भाव को प्रकट करने के

लिये है। संवेग भाव की पहचान देते हुए इसी ग्रंथ मे बताया है कि, "संवेग परायण महापुरुषों ने भव-संसार का अत्यंत भय या मोक्ष की तीव्र अभिलाषा को संवेग कहा है। (श्लोक : ५५)

सागर जैसे इस ग्रंथ में कई विषयों का विस्तृत विवेचन है। जिसमें, धर्म आराधना की योग्यता में आवश्यक २० गुण विनय, धर्म की दुर्लभता, धर्म का स्वरुप, साधु धर्म, गृहस्थ धर्म, ज्ञान, क्रिया, भावश्रावक की भावना, व्रत, नियम, प्रतिमाएं, मरण, अनशन, भावना, आलोचना, अनुशासन, श्रमणाचार और संघ व्यवस्था, १८ पाप स्थानकों का विवेचन, आमद (अभिमान) कषाय, सम्यकत्व, परमेष्ठि नमस्कार, महाव्रत, चार शरण, दुष्कृत गर्हा, सुकृत अनुमोदना, इन्द्रिय दमन, नियाणा (निदान) प्रकार, उपदेश, ध्यान लेश्या और अंत में महापारिष्ठापनिका (श्रमण देह का संस्कार) ऐसे कई विषयों को ४ द्वार (विभाग) १ परिक्रमविधि (१५ अन्तर्गत द्वार) २ परगण-संक्रमण (१० अन्तर्गत द्वार) ३ ममत्व विमोचन (९ अन्तर्गत द्वार) ४ समाधिलाभ (९ अन्तर्गत द्वार) में आराधना के स्वरुप का विवेचन किया गया है।

ग्रन्थकर्ता आचार्यश्री ने विशेष में पहले परिक्रम द्वार के ९ में परिणाम अन्तर्गत द्वार के तीसरे कालक्षेप द्वार में साधारण द्रव्य के उपयोग हेतु १० स्थान बताये गये है। १. जिनमंदिर, २. जिनबिंब, ३. जिनबिंबों की पूजा, ४. जिनवचन से युक्त जैनागमरुप प्रशस्त पुस्तकें, ५. मोक्ष साधक गुणों को साधने वाले साधु, ६. ऐसी साध्वी, ७. उत्तम धर्मरुपी गुणों को पाने वाले सुश्रावक, ८. ऐसी श्राविकाएं, ९. पौषधशालाएं (उपाश्रय) और १०. यथायोग्य सम्यगदर्शन का (शासन का या संघ का) कोई कार्य हो तो वह।

सद्गृहस्थ को अपनी असार संपत्ति धर्म मार्ग पर व्यय करने का मनोरथ होता ही है! उपर्युक्त १० स्थानकों में वर्तमान में १०वां स्थान अति महत्त्व का बन चुका है। ग्रंथ के श्लोक नं. २९०२ से श्लोक नं. २९२९ तक के २७ श्लोकों में साधारण द्रव्य का उपयोग द्रव्य, क्षेत्र, काल के मुताबिक

उपस्थित होने वाले कार्यों में किया जाय तो वह जिन शासन की सेवा कारण तो बनता ही है, साथ साथ पुण्यानुबंधी पुण्योपार्जन द्वारा इस जन्म और आने वाले जन्मों में सुख समृद्धि एवं यश परंपरा देने वाला बनता है, वह बात दर्शायी है ।

वि.सं. २०३२ में प्रस्तुत ग्रंथ का सरल गुजराती भाषा में अनुवाद पूज्य आचार्य भगवंत भद्रंकरसूरिजी म.सा. द्वारा हुआ, जो दूसरी आवृत्ति के रुप में उपलब्ध है । आचार्य श्री पद्मसूरिजी म.सा. द्वारा हिन्दी भाषा में अनुदित ग्रंथ भी उपलब्ध है ।

दर्शन द्वार

दंसणकज्जं मेयं, चेइयसंघाइगोयरं अमिह ।
अवितविकयं कया वि हु, विसेसकिच्चं तहारूवं ॥२९०२॥

यहाँ पर चैत्य संघ आदि का अचानक ऐसा कोई विशिष्ट कार्य किसी समय आ जाये तो वह दर्शन कार्य जानना ।

तं पुण दुविहं इहइं, अपसत्थपसत्थभेयओ जाण ।
तत्थाऽपसत्थगं तं, जं पऽणीयाऽऽइदरेण ॥२९०३॥
तित्थयरभवणपडिमा-भवंतभंगाऽऽइयाऽणुबद्धाणं ।
संघोवद्दछोभगरूवं, पडणीयकयमऽहवा ॥२९०४॥

वहा यहाँ अप्रशस्त और प्रशस्त भेद से दो प्रकार का जानना, उसमें जो धर्म विरोधी आदि द्वारा जिन भवन या प्रतिमा का तोड़-फोड़ करना इत्यादि उस सम्बन्धी कार्य करना अथवा धर्मद्वेषी का संघ को उपद्रव करना या क्षोभरूप कार्य करना, वह अप्रशस्त जानना ।

देवादायाऽऽइकरावणाऽऽइ-विसयं च जं पसत्थं तं ।
तत्थ दुगे वि हु रायाइ-दंसणं संभवइ पायं ॥२९०५॥

और देवद्रव्य सम्बन्धी श्रावक आदि से करवाना, इत्यादि उस सम्बन्धी कार्य करना, वह प्रशस्त जानना । इन दोनों प्रकार में भी प्रायः राजा आदि के दर्शन-मिलन से हो सकता है ।

तं च न विणोवयारं, तदऽसंपत्ती जया उ अण्णतो ।
ता साहारणदव्वाओ, तं विचिंतेज्ज उचियण्णू ॥२९०६॥

उस राजादि को मिलने का कार्य भेंट आदि दिये बिना नहीं होता है, इसलिए जब दूसरी ओर ऐसा धन नहीं मिले तो उचित कार्य के जानकार श्रावक साधारण द्रव्य से भी उसे देने का विचार करें ।

एवं च कए के के, न उभयलोगुब्भवा गुणा तस्स ।
इह लोयम्मि कित्ती, परलोए सुगइगामित्तं ॥२९०७॥

ऐसा करने से इस लोक में कीर्ति और परलोक में सद्गति की प्राप्ति इत्यादि लाभ होता है । तो उभयलोक में कौन-कौन से गुण लाभ नहीं होतें ?

चेइयकुलगणसंघे, आयरियाणं च पवयणसुए य ।
सव्वेसु वि तेण कयं, एत्थ जयंतेण जहजोगं ॥२९०८॥

इश कार्य में यथायोग्य प्रयत्न करना चाहिए । उसे (१) चैत्य (२) कुल (३) गण (४) साधु (५) साध्वी (६) श्रावक (७) श्राविका (८) आचार्य (९) प्रवचन और (१०) श्रुत, इन सबका भी कार्य करणीय है ।

साहारणस्स जम्हा, चेइयभवणाऽऽइयं इमं चेव ।
वुत्तं दसगं विसओ, ता धण्णाणं खु एत्थ मई ॥२९०९॥

क्योंकि साधारण द्रव्य का खर्च जिनमंदिर आदि इन दस में करने को कहा है । इसलिए - धन्यात्माओं को ही निश्चय रुप से इस विषय में बुद्धि प्रकट होती है ।

इह होज्ज कस्सइ मई, ठाणदगसगं इमं न हु कहिंपि ।
वृत्तं जिणुत्तसुत्ते, न परुतं पुण पमाणत्ते ॥२९१०॥

यहाँ पर किसी को ऐसी कल्पना हो कि - यह दस स्थान जिन कथित सूत्र में किस स्थान पर कहे है ? और जिन के बिना अन्य का कहा हुआ प्रमाणभूत नहीं है ।

स इमं वत्तव्वो हंत ! समुदियं नो कहिं पि भणियमिणं ।
भेएणं पुण सुत्ते, भणियं चिय बहुसु ठाणेसु ॥२९११॥

तो उसे इस तरह समझो कि - निश्चित रुप से इन दस को समुदित - एकत्रित कहीं पर नहीं कहा है, परन्तु भिन्न-भिन्न रुप में सूत्र के अंदर कई स्थान पर कहा ही है ।

इह सागारणदव्वं, पयइं चिय ताव दंसियं सुत्ते ।
चेइयदव्वं साहा-रणं च इच्चाइवयणेहिं ॥२९१२॥

और सूत्र में चैत्यद्रव्य, साधारण द्रव्य इत्यादि वचनों से साधारण द्रव्य को स्पष्ट अलग बतलाया ही है,

तस्स विणिओगठाणं पि, अत्थओ भणियमेव भवइ धुवं ।
इह पुण दसहा जिणमंदिराऽऽइरूवेण चं चेव ॥२९१३॥
विसयविभागेण फुडं, निरूवियं भव्वजणहियडट्ठाए ।
आगमविरोहविरहेण, कुसलबंधिक्कहेउ त्ति ॥२९१४॥

तो अर्थापत्ति से उसको खर्च करने का स्थान भी निश्चय ही कहा है। इस तरह कुशल अनुबंध का एक कारण होने से भव्य जीवों के हित के लिए आगम के विरोध बिना-आगम के अनुसार हम ने कहाँ उस स्थान को ही जिनमंदिरादि रूप दस प्रकार के विषय को विभाग द्वारा स्पष्ट बतलाया है ।

जिणभवणाऽऽइपयाणं, एक्केक्कमि वि कया य पडिवत्ती ।
पुण्णनिमित्तं जायइ, किं पुण ताणं समुदियाणं ॥२९१५॥

इन जिनमंदिरादि स्थानों में एक-एक स्थान की भी सेवा पुण्य का निमित्त बनती है, तो यह समग्र ही सेवा का तो कहना ही क्या ? अर्थात् अपूर्व लाभ है ।

साहारणं च दव्यं, आरंभंतस्स तद्दिणाओ वि ।
जिणभवणप्पमुहेसु, जायइ सव्वेसु पडिवत्ती ॥२९१६॥

यह साधारणद्रव्य प्राप्ति के लिए प्रारम्भ करते समय से ही आत्मा को उसी दिन से जिनमंदिर आदि सर्व की सेवा चालु होती है ।

जं तस्स साऽणुबंधो, पधावइ पढममेव समकालं ।
तव्विसयसव्वदव्व-क्खेच्चाऽऽइसु चित्तपडिबंधो ॥२९१७॥

क्योंकि उसका अनुबंधपूर्वक चित्त का राग प्रारंभ से ही एक साथ में उनके विषयभूत सर्व द्रव्य, क्षेत्र आदि में पहुँच जाते हैं ।

तम्हा नियदव्वाओ, किंचि विहवाऽणुसारओ चेव ।
परिचिन्तऊण साहा-रणस्स प्रारंभगा जे उ ॥२९१८॥

इसलिए सर्व प्रकार से विचारक:, अपने वैभव के अनुसार कुछ भी अपने धन से वे साधारण द्रव्य को एकत्रित करना प्रारंभ करते है ।

ज य अणिंदियविहिणा, पइदिणमेयं नयंति परिवुड्ढिं ।
परिवालयंति जे वि य, अचलियचित्ता महासत्ता ॥२९१९॥

जो अन्याय आदि किये बिना विधिपूर्वक प्रतिदिन उसकी वृद्धि करते हैं, अचलित चित्तवाला जो महासत्त्वशाली उसमें मोह रखें बिना उसका रक्षण करता है ।

जे वि य पुव्वुत्तकमेण, चेव जुंजंति न जहाजोगं ।
तित्थयरनामगोत्तं, कम्मं बंधंति ते धीरा ॥२९२०॥

और जो पूर्व कहे अनुसार क्रम से निश्चय उसे उस-उस स्थान पर आवश्यकतानुसार खर्च करता है, वह धीर पुरुष तीर्थंकर गोत्र कर्म का पुण्य उपार्जन करता है ।

पइदिणतव्विसयपवड्ढ-माणमाणसविसेसपरिओसा ।
नारयतिरियगइदुगं, ते नूण नरा निरुंभंति ॥२९२१॥

और प्रतिदिन उस विषय में बढते अध्यवसाय से अधिकाधिक प्रसन्नता वाला वह पुरुष निश्चय ही नरक और तिर्यच इन दो गति को रोक देता है। उसका वहाँ जन्म कभी नहीं होता है ।

संपज्जंति कया वि य, न बंधगा अयसनीयगोत्ताणं ।
जायंति य सविसेसं, निम्मलसम्मत्तरयणधरा ॥२९२२॥

और उसको कभी भी अपयश नाम कर्म और नीच गोत्र का बंध नहीं होता है, परन्तु वह सविशेष निर्मल सम्यक्त्व रत्न का धारक बनता है ।

थी पुरिसो वा पच्छा वि, तत्थ रित्थं नियं पयच्छइ जो ।
सो कल्लाणपरंपर-मऽवियप्पं पावए परमं ॥२९२३॥

स्त्री अथवा पुरुष जो पूर्व में साधारण में खर्च न किया हो तो भी बाद में भी अपने धन को साधारण में देता है वह अवश्यमेव उत्तरोत्तर परम कल्याण की परंपरा को प्राप्त करता है ।

इह लोगे च्चिय जायइ, नियजसपब्भारभरियभुवणयलो ।
पुण्णाऽणुबंधिसंपय-सामी भोई सुपरिवारो ॥२९२४॥

इस जन्म में भी अपने यश समूह से तीनों भव को भर देता है । पुण्यानुबंधी संपत्ति का स्वामी, पवित्र भोग सामग्रीवाला और उत्तम परिवार वाला बनता है ।

जम्मंतरम्मि उत्तम-देवो तदणंतरं सुकुलउत्तो ।
तत्तो चरित्तसंपत्ति-भायणं तयणु सिद्धो वि ॥२९२५॥

और परभव में उत्तम देव, फिर मनुष्य भव में उत्तम कुलिन पुत्र रूप में चारित्र संपत्ति का अधिकारी बनकर वह अंत मे सिद्ध-पद प्राप्त करता है।

किं बहुणा भणिएणं, जइ ता न हु तब्भवेण से मोक्खो ।
ता तइयसत्तमेसुं, अट्ठमयं पुण न लंघेइ ॥२९२६॥

अब अधिकर कहने से क्या ? यदि उस भव में उसका मोक्ष न हो

तो तीसरे भव से सातवें भव तक में अवश्य होता है, परन्तु आठवें भव से अधिक नहीं होता है ।

जे पुण तम्मूढणा, वामोहेणं कहिं पि केणाऽवि ।
नियपक्खवायवसगा, एक्कम्मि चेव जिणभवणे ॥२९२७॥
जिणबिंबे वा मुणिसावगाऽऽइव वा वि एक्कहिं चेव ।
न य सव्वजिणगिहाऽऽईसु, सम्मं पुव्वोदितविहीए ॥२९२८॥
वेच्चंति वंचगा पव-यणस्स ते कुगतिगामिणो जेण ।
तारिसपवित्तिओ ते, सासणवोच्छेयमिच्छंति ॥२९२९॥

और जो किसी से मोहित हुआ साधारण द्रव्य में मूढ मनवाला व्यामोह से अपने पक्षपात के आधीन बना केवल जिनमंदिर अथवा जिनबिम्ब, मुनि या श्रावक आदि किसी एक ही विषय में साधारण द्रव्य का व्यय करता है, परंतु पूर्वानुसार आवश्यकता हो वहाँ विधिपूर्वक जिनमंदिरादि सर्व क्षेत्रों में सम्यग् व्यय नहीं करता है । वह प्रवचन (आगम) का वंचन या द्रोही कुमति को प्राप्त करता है । क्योंकि ऐसी प्रवृत्ति वह शासन का विच्छेदन करना चाहता है अथवा करता है ।

आणंदजी कल्याणजी पेढी की वेबसाईट का नाम है :
www.anandjikalyanjipedhi.org
पेढी की मोबाईल एप [Mobile App] भी है ।
एन्ड्रोईड (Android) एवं एप्पल (Apple) दोनों प्लेटफोर्म पर से डाउनलोड़ कर सकेंगे ।
E–mail : info@anandjikalyanjipedhi.org
Social Presence
Download :Anandji Kalyanji Pedhi App

तारंगा तीर्थ

गुजरात के पहाडों पर के तीर्थों में तारंगा भी एक विशिष्ट तीर्थस्थल है। वि.सं. १२४१ में श्री सोमप्रभाचार्य द्वारा रचित 'कुमारपाल प्रतिबोध' से ज्ञात होता है कि, वेणी वत्सराज नामक बौद्धधर्मी राजा ने यहाँ तारादेवी के मंदिर का निर्माण करवाया था तब से यह स्थान "तारापुर" नाम से प्रसिद्ध है। तत्पश्चात् आर्य खपुटाचार्य (विक्रम की प्रथम शताब्दी) के उपदेश से उस राजा ने जैन धर्म स्वीकार किया तब उसने यहाँ जिनेश्वरदेव की शासन अधिष्ठात्री सिद्धायिकादेवी के मंदिर का निर्माण करवाकर उसे जैनों के तीर्थ के रूप में प्रसिद्ध किया। हालाकि कुछ इतिहासकार इस बात से सहमत नहीं हैं। इसके बाद लगभग तैरहवीं शताब्दी तक का इस तीर्थ का इतिहास अंधकार में है।

तैरहवीं शताब्दी में तारंगागिरि पर निर्मित बावन देवकुलिकाओं वाला उत्तुंग देवप्रासाद आज भी जैनाचार्य श्री हेमचंद्रसूरि और गूर्जरनरेश कुमारपाल की लगभग ९०० वर्ष पहले की कीर्ति को भी विस्तृत किये हुए है। इस पर्वत और इसकी गुफाओं में कितने ही योगियों और मुनियों तथा साधकों की स्मृतियाँ जड़ित हैं, जिस कारण यह वंदनीय तीर्थधाम बन हो गया है।

प्राचीन जैन प्रबंधों और तीर्थमालाओं में तारंगा को तारउर, तारावरनगर, तारणगिरि, तारणगढ़ आदि नाम से उल्लेखित किया गया है। वर्तमान में तारंगा नाम प्रसिद्ध है।

मेहसाणा से आनेवाले रेलमार्ग में तारंगा अंतिम पहाड़ी स्टेशन है।

पहाड़ पर श्वेतांबरों के ५ मंदिर और ३ टोंक अन्य देहरियाँ हैं। चार सुविधा संपन्न धर्मशालाएँ तथा भोजनशालाएँ है। दिगंबरो के भी पाँच मंदिर, ७ देहरियाँ और धर्मशालाएँ हैं।

तीर्थ के मुख्यद्वार से प्रवेश करने पर बायीं ओर श्री अजितनाथ मंदिर के सामने लगभग तीन फूट ऊँची एक देहरी में कीर्तिस्तंभ विद्यमान है। उसके ऊपर कुमारपाल के अंतिम वर्ष के समय का लेख लिखा है। पाँच मंदिरों

में श्री अजितनाथ भगवान का मंदिर विशाल चोक से घिरा हुआ उन्नत और विशाल है। इस मंदिर को बनाने हेतु कुमारपाल नरेश ने श्रेष्ठी यशोदेव के पुत्र दंडनायक अभय को आदेश दिया था।

राजा कुमारपाल के इधर-उधर भटकने के समय मूषक तथा ३२ स्वर्णमुद्राओं की अनुश्रुति-कथा के कारण इस जिनालय को 'मूषक विहार' इस नाम से भी पहचाना जाता है।

मुनि प्रभानंद कृत 'प्रभावकचरित्र' में (वि.सं. १३३४ - ई.स. १२७८) उल्लेख है कि, कुमारपाल राजा ने अर्णोराज पर आक्रमण किया, उस समय भगवान अजितनाथ की जो मानता मानी थी उसकी पूर्तिस्वरूप उन्होने तारंगा पर २४ गज ऊँचा मंदिर बनवाया और उसमें १०१ अगुल (इंच) की प्रतिमा स्थापित की थी।

'पुरातन प्रबंध संग्रह' के उल्लेख से ज्ञात होता है कि, जब अजयपाल जैनमंदिरो को ध्वस्त करने लगा तब वसाह और आभड नामक मुख्य श्रेष्ठियों ने संघ को एकत्रित कर कुमारपाल द्वारा बनवाए गए मंदिर को अजयपाल से कैसे सुरक्षित रखा जाए इसका विचार करते हुए उस समय के शीलनाग नामक अधिकारी से मिल कर शेष बचे हुए तारंगा के मंदिर को बचाने हेतु निवेदन किया। शीलनाग ने बुद्धि चातुर्य का प्रयोग कर तारणगढ़ का मंदिर और अन्य दूसरे चार मंदिर बचा लिए थे।

यह मंदिर बत्तीस मजलों की ऊँचाईवाला बनाया गया था। ऐसा भी कहा जाता है। आज तो इसके तीन-चार मजलें ही विद्यमान हैं। मंदिर को पहली नजर में ही देखकर कलाविद् शिल्पी द्वारा रचित शिल्पशास्त्र के अनुसार उत्कीर्णित इस सर्वांग सुंदर रचना की प्रामाणिकता को परख लेता है। शिल्पी के द्वारा आलेखित जगति की ऊँचाई, संधियाँ, पद्म कर्णिका, अंतर्णिका, ग्रासपट्टिका, कुंभ, कलशादि शिल्प के नियमानुसार पूर्णतया संरचित है। मंदिर में विस्तृत कलालेखन सामान्य होने पर भी सुंदर और वैविध्यतापूर्ण होने के कारण मनोहर लगता है। सोलंकीकाल की सौंदर्यकला का यह उत्तम नमूना शिल्पयोजना का एक आदर्श उदाहरण कलाविद् के समक्ष

प्रस्तुत करता है। हांलाकि उसमें बाद में किए गए संस्करण भी दिखाई देते हैं। सत्रहवीं शताब्दी में हुए श्री ऋषभदास कवि 'कुमारपालरास' में कहते हैं कि, 'इस मंदिर के शिखर को कोई क्षति नहीं पहुँची है'। अर्थात् वह प्राचीन काल का होना बताते हैं।

प्रासाद का मंडप और शिखर अनेक प्रकार की नक्काशी से भरा हुआ है। मंदिर के पीछे ६४ दीवार मार्ग हैं, जिनमें से एक भी दीवार नक्काशी विहिन नहीं हैं। इनमें यक्ष, गंधर्व और नृत्यांगनाओं की भावनात्मक को भावभंगिमा को मूर्तरूप देने में कमी नहीं रखी गई है। आबू के मंदिरो के जैसी महीन नक्काशी न होने पर भी इसकी भव्यता आँखो को चकाचौंध कर देने वाली है। वास्तव में इस मदिर की ऊँचाई अद्वितीय है ।

मंदिर के आसपास २३० फीट जितना लंबा-चौड़ा एक चोक है। चोक के मध्य में १४२ फीट ऊँचा, १५० फीट लंबा और १०० फीट चौड़ा भव्य मंदिर स्थित है। लगभग ६३९ फीट का घेराव लिए हुए यह मंदिर है। समूचा मंदिर खारे पत्थर से बनाया गया है। ईंट और चूने का ऐसा मिश्रण इतने संतुलित प्रमाण में शास्त्रीय द्रष्टि से हुआ है कि, आज ८०० वर्ष गुजर जाने के बाद भी मंदिर के किसी भाग भी को कोई विशेष क्षति नहीं पहुँची है।

मंदिर का मुख और द्वार पूर्वाभिमुख है। पूर्व के द्वार से प्रवेश करने पर अंबिका माता और द्वारपाल की मूर्तियों के दर्शन होते हैं। मंदिर में प्रवेश करने की तीनों दिशाओं में तीन प्रचंड द्वार और त्रिशाखाद्वार हैं तथा प्रवेशद्वार के गुंबद में दोनों और ग्रासमुख हैं। सौपान के पदतल आरस पत्थर के किन्तु सादे हैं।

मंदिर के सिंहद्वार के पास एक विशाल अग्रमंडप मंत्री वस्तुपाल ने बनवाया था और उसमें दोनों और दो विशाल गवाक्ष बनवाकर भगवान की मूर्तियाँ स्थापित की थी परंतु वह अब विद्यमान नहीं है। मात्र लेख के साथ आसन है।

मंदिर में मूल गर्भगृह, गूढमंडप, रंगमंडप और चोकियों के विभाग की संरचना की गई है। रंगमंडप से मूलगर्भगृह की ओर जाने के लिए दो छोटे द्वार हैं। उसके बाद ही मूलगर्भगृह का प्रवेशद्वार आता है। मूलगर्भगृह १८ फीट लंगा और २३ फीट चौड़ा हैं। समूचा गर्भगृह मकराना के आरस पत्थर से मंडित हैं। मूलगर्भगृह में मूलनायक के रूप में श्री अजितनाथ भगवान की मूर्ति बिराजमान है। यह मूर्ति १५ हाथ ऊँची और मनोहर है। उसके दोनों और लकड़ी की सिढियाँ रखी हुई हैं। उन पर चढ़कर ही मस्तक की पूजा हो सकती है। आसपास पंचतीर्थी का भव्य परिकर है। मूलनायक की पालथी पर संक्षिप्त लेख है परंतु उसका अधिकांशतः भाग मिटसा गया है।

सं. १४७२ में ईडर के रहनेवाले श्रेष्ठि संघवी गोविंद ने इस तीर्थ के उद्धार करने हेतु नौ भारपट बनाए थे और स्तंभ भी बनवाए थे तथा अपनी पत्नी जायलदे आदि परिजनो के साथ अपने कल्याण हेतु श्री अजितनाथ भगवान की मूर्ति प्रतिष्ठित करवाई थी।

इस उल्लेख को पं. प्रतिष्ठासोम के द्वारा सं. १५५४ में रचित "सोमसौभाग्यकाव्य" के सातवें सर्ग के विस्तृत वर्णन से समर्थन मिलता है।

श्री विजयसेनसूरि ने जिन तीर्थो का उद्धार करवाया उसमें तारंगा के मंदिर का भी उल्लेख है और उस उद्धार का सं. १६४२ के अषाढ सुदि १० का लेख मूल मंदिर के दक्षिणद्वार की दीवार पर विद्यमान हैं।

मूलनायक के दोनों ओर कोने में एक-एक मूर्ति है। उन दोनों मूर्तियों के परिकर के ऊपर भी लेख उत्कीर्ण हैं। इन दोनों लेखों में पहला लेख सं. १३०४ के अषाढमास वदि-७ शुक्रवार का है। दूसरे लेख में श्री धर्मघोषसूरि के शिष्य देवेन्द्रसूरि का नाम अधिक है। दोनों के प्रतिष्ठापक आचार्य श्री भुवनचन्द्रसूरि हैं। इन प्राचीन परिकरों में स्थित मूर्तियों की बाद में स्थापना की गई हो ऐसा अनुमान होता है।

नीचे के भाग में दोनों ओर कोने में एक-एक सुंदर बड़ी-बड़ी

कायोत्सर्ग प्रतिमाएँ हैं । ये दोनों कायोत्सर्ग प्रतिमाएँ खेरालु और पालनपुर के बीच में स्थित सलामकोट नामक गाँव से आधे मील की दूरी पर स्थित पुराने सलामकोट से अथवा उसके आसपास की जमीन से वर्षों पहले मिली थीं । वहाँ से लाकर यहाँ स्थापित की गई हैं । इन दोनों कायोत्सर्ग प्रतिमाओं के बीच में मूलनायक के स्थान पर दो बड़ी खड़ी हुई जिनमूर्तियाँ निर्मित हैं । और उन दोनों में मूल मूर्ति के दोनों और तथा ऊपर से होकर अन्य छोटी छोटी ग्यारह-ग्यारह जिनमूर्तियाँ बनी हुई होने के कारण लेख में इसका उल्लेख द्वादशबिंब पट्टक के नाम से किया गया है ।

मूलगर्भगृह के आसपास प्रदक्षिणा पथ है । उसमें हवा-प्रकाश के लिए तीन खिड़कियाँ रखी गई हैं । मूलगर्भगृह के बाद गूढमंडप है । इसमें एक आले में मूर्ति है ।

वि.सं. १२१६ के वैशाखमास की सुदि-३ के दिन उत्कीर्ण कीये गए आबू के लूण-वसही शिलालेख में वरहुडीयावंशीय शेठ नेमड के परिवार के सदस्यों ने आबू और उसके अलावा अन्य तीर्थों में और गाँवों में भी मंदिर, मूर्तियाँ, आले, देहरियाँ तथा जीर्णोद्धार आदि जो जो कार्य करवाया उसका उल्लेख किया हुआ है । उसमें तारंगा के विषय में इस प्रकार उल्लेख मिलता है ।

"तारणगढ के ऊपर श्री अजितनाथ (मंदिर) के गूढमंडप में श्री आदिनाथ के बिंब से युक्त आला (गोखला) बनवाया" । इस शिलालेख का साक्ष्य उक्त समय से पूर्व ही मंदिर के निर्माण किए जाने की बात की भी पुष्टि करता है ।

मंदिर का रंगमंडप १९० फीट के घेराव मैं है और अष्टभद्र और षोडशभद्रवाले आठ स्तंभो पर खडा है । इन स्तंभो की ऊँचाई १५ फीट और मोटाई ८ फीट की है । बाद में सावधानी पूर्वक खडे किए गए स्तंभ उसे सहारा देते हैं । समस्त मंदिर को सुरक्षित रखने हेतु मंदिर के अंदर और बहार सौ से भी अधिक स्तंभों की कतार खड़ी की गई है । स्तंभों की संरचना अति सामान्य है । उनके नीचले छोर पर कुंभियाँ और ऊपर के छोर पर

शिर रखे हैं। घूमर में विद्याधर और देवीदेवताओं की नृत्य पूतलियाँ विभिन्न रंगो में नाट्य के वाद्ययंत्रो के साथ भावभंगिमा के अभिनव को प्रदर्शित करती हुई खडी हैं। नृत्य के ये भक्तिप्रकार भारतीय कला-संस्कृति की स्मृति दिलाते हैं। इसमें अन्य शिल्यानक्काशी नहीं है। अन्य प्रकार से घूमट बिल्कुल सादा है। विशालता ही उसका गौरव है।

सभामंडप के एक आले (गोखले) में आचार्य की एक गुरुमूर्ति बिराजमान है। उसके नीचे नाम या लेख नहीं है परंतु संभव है कि वह श्री हेमचंद्राचार्य की मूर्ति हो। फिलहाल उसे गौतमस्वामी के रुप में पूजा जाता है।

छः चोकियों के घूमट का दिखाव मनोहर है। उसकी छत में सामान्य किंतु सुरेख अंकित है। शृंगारचोकी की छत में भी महीन नक्काशी की गई है। इन सभी शिल्पकलाओं को देखकर कुछ पल के लिए तो मुग्ध हो जाते हैं।

मंदिर के तीन स्तर हैं और मंजलों की संरचना कुछ क्षण के लिए भ्रमित कर दे ऐसी है। मंदिर को सुरक्षित रखने के लिए इन स्तरों मे 'केगर' नामक लकडी का उपयोग किया गया है। ऐसी लकड़ी का उपयोग अन्य मंदिरों में शायद ही देखने को मिलता है। यह लकडी आग में नहीं जलती, बल्कि आग लगने से उसमें से पानी निकलने लगता है।

शिखर तक पहुँचने के लिए दीवार का मार्ग हैं और बीच में स्थित विशाल गोलाकार मंडप में ११ प्रतिमाएँ और एक ध्वजदंड पुरुष की आकृति दिखाई देती है। इस भव्य मंडप की कलाकृति अद्‌भूत है।

मंदिर की पूर्व दिशा के द्वार के पास दायें हाथ की और एक देहरी में श्री अजितनाथ भगवान की चरणपादुकाओं की १ बड़ी जोड़ी है। साथ ही बीस विहरमान जिन की २० जोडियाँ हैं। इनके पास की एक देहरी में श्री विजयसिंहसूरि तथा श्री सत्यविजय पंन्यास आदि की चरणपादुकाओं की ९ जोडी हैं। अन्य एक देहरी में प्राचीन पाषाण से निर्मित चौमुखजी की प्रतिमा है।

उसके पास चौमुखजी का शिखर युक्त एक मंदिर है। उसमें पीले रंग की चार चौमुख मूर्तियाँ हैं।

उनके पास सहस्रकूट का एक बडा जिनालय है । मंदिर के मध्य भाग में ही आरस पत्थर में सहस्रकूट की उत्कीर्णित संरचना है, जिसमें १०२४ जिनों की मूर्तियाँ उत्कीर्णित हैं ।

इस मंदिर के चारों कोनों में आरस पत्थर पर विभिन्न संरचनाएँ की गई हैं । (१) समवसरण की रचना में चौमुखजी की चार मूर्तियाँ बिराजित हैं । (२) दूसरे कोने में चरणपादुकाओं की जोड़ी है उनके बीच में, चार छोटे आकार के खंभे खड़ेकर उन पर एक स्तूप जैसा आकार बनाया गया है उस स्तूप में एक और बीसस्थानक यंत्र का पट्ट उत्कीर्ण किया गया है। उसके एक और मधुर्बिदु का भाग आलेखित है । दूसरी ओर सिद्धचक्र भगवान का यंत्र उत्कीर्णित है । इसी प्रकार चौदह राजलोक का भाव अंकित किया गया है । (३) तीसरे कोने में अष्टापद की संरचना है, और (४) चोथे कोने में सम्मेतशिखर का भाव उत्कीर्णित है ।

सहस्रकूट मंदिर के पास ही नंदीश्वरद्वीप की संरचना का एक शिखरबंद बड़ा मंदिर है । मंदिर के मध्य भाग के आरंभ में जंबूद्वीप आदि सात समुद्र की संरचना उत्कीर्ण की गई है । नंदीश्वरद्वीप के बावन जिनालयों के बावन पर्वतों का प्रदर्शन कर उन पर चौमुखजी बिराजमान किए गए हैं।

सहस्रकूट का मंदिर वि.सं. १८७३ में और नंदीश्वरद्वीप का मंदिर वि.सं. १८८० में श्री संघ ने बनवाया है । इससे संबंधित शिलालेख विद्यमान हैं । मुख्य मंदिर के पीछे श्री कुंथुनाथ भगवान का शिखर युक्त मंदिर है । पास के कोने में एक विशाल चबूतरे पर छोटी-छोटी देहरियाँ में भिन्न-भिन्न साधुओं की चरणपादुकाएं स्थापित की गई हैं ।

बरसों के प्रवाह के साथ काल के थपेड़ों और समय के बहाव ने मंदिर को जीर्ण-शीर्ण बनाकर रख दिया.... कहीं मुस्लिम आक्रमणकारी शासकों के जुल्मोंने भी इसे नुकसान पहुँचाया । कला के उत्कृष्ट नमूने रुप बाहरी विस्तार के शिल्प के रुपकाम क्षतिग्रस्त हो गयें । घिस गयें... और मिट्टी-बरसात की वजह से पर्ते जमती गयी... मिट्टी के ढेर चिपक गयें... शिल्प के अंग क्षतिग्रस्त होकर बदसूरत होने लगें । कहीं आधे हाथ खंडित

हो गये... कहीं शिल्प की उंगलिया टूट गयी। कही कंधों मे दरारें पड़ गयी... और खुबसूरती का यह नजारा बदसूरती का लिबास ले बैठा। इसी दौरान स्थानिक लोगों ने इसकी सुरक्षा के उद्देश्य से या कहीं ये और ज्यादा काले न हो उठे... इसलिए इस पर चूने की परतें चढा दी। पर्त दर पर्त के चढते चूने ने समूचे शिल्प को ढंक दिया... आवृत्त बना दिया। व्यवस्था की समस्या और स्थानीय छोटे छोटे शासकों ने इसे जागीर समझ कर उपेक्षित बना डाला। समीप के गाँवों के जैन संघ ने इस तीर्थ की व्यवस्था को बनाये रखने की भरसक कोशिश की... टींबा... सतलासणा... वाव गाँव के लोगों ने काफी समय इसे सम्हाला। आखिर वि.सं. १९७७ (इस्वीसन १९२१) में टींबा जैन संघ और तारंगाजी जैन श्वेताम्बर तीर्थ कमिटि ने इस तीर्थ का पूरा व्यवस्था भार आणंदजी कल्याणजी पेढी ने सुपर्द कर दिया। पेढीने धीरे धीरे इस तीर्थ की व्यवस्था का पुनर्गठन किया। महत्त्वपूर्ण कार्य था मंदिर के जीर्णोद्धार का।

इस्वीसन् १९६३ में इस तीर्थ के गौरवरुप श्री अजितनाथ स्वामी जिनालय के जीर्णोद्धार के बारे में पेढी के तत्कालीन प्रमुख शेठ श्री कस्तुरभाई लालभाई ने अन्य ट्रस्टीयों के साथ लम्बा विचार विमर्श किया। शिल्प और स्थापत्य के निष्णात स्थपतियों से, सोमपुरा से चर्चा की। और जीर्णोद्धार की समूची कार्यवाही का भार पेढी के साथ जुडे हुए प्रख्यात सोमपुरा मनसुखभाई को सौंपा गया। मनसुखभाई और उनकी पूरी टीम ने इस कार्यवाही का मंगल प्रारंभ करते हुए तारंगा की पहाडियों के बीच अपने डेरे डालें।

वैसे देखा जाये तो यह पूरी कार्यवाही अत्यंत मेहनत, धैर्य, परिश्रम और सतर्कता से भरीपूरी थी। पहले पहल तो शिल्पकाम की पूतलियों के अंगोपांग, खंडित... क्षतविक्षत अंगोपाग को और उनके हिस्सों को प्लास्टर ओफ पेरिस से निर्मित करवा कर उन्हे लगाकर जमा कर देखा... एकदम उपयुक्त एवं बराबर लगने पर वैसा ही मूलरुप का संगमरमर... पाषाण और पत्थर मंगवा कर उन्हे नक्काशा गया... तराशा गया। और बाद में उन्हें इस

तरह से जोड़ा गया कि कहीं किसी तरह का संधान या जुडाव दिखायी न दे । संधिया जोड़ खोजने पर भी न मिले । यह सारा कार्य उतना सरल या आसान था नहीं.... पर इधर सेठ कस्तुरभाई कलापारखी बुद्धि... दीर्घदर्शिता, स्थापत्य से संबंधित विशद जानकारी और उन्हें जो निष्णात शिल्पी सोमपुरा कारीगर मिले... इन सब की बदौलत असंभव लगनेवाली बात संभव हो उठी। कारीगरों ने वास्तव में शिल्प की पुनर्स्थापना में जान डाल दी । चतुर्विध संघ के परम पूज्योदय से पूज्य आचार्य भगवंत, मुनि भगवंतो के आशीर्वाद के साथ साथ तीर्थ के प्रति असीम श्रद्धा-भक्ति व अहोभाव रखनेवाले आराधकों, साधकों एवं भक्तों की सूक्ष्म ऊर्जा ने काम किया । कला के पार्खी महेनती कारीगरों की दिनरात की मेहनत रंग लायी... और शिल्प स्थापत्य का विलुप्त हो रहा खजाना पुनर्जीवित हो उठा । हालांकि इस में १५ बरस जितना लम्बा समय लगा । इस जमाने में १५ लाख रुपयों का व्यय भी हुआ । पर सब सार्थक हो उठा । आज भी दक्षिण की और के स्थापत्य में शिल्पी ने ३-४ मूर्तियाँ खंडित... व नुकसान हुई ज्योंकि त्यों रखी है ताकि दर्शक व कला पारखी लोगों को अंदाजा लग जाए की जीर्णोद्धार कितनी महेनत व परिश्रम का परिणाम है ।

मंदिरजी के उपर शिखर के हिस्से में करीबन ३ मजलों से भी ज्यादा हिस्सा आज भी सुरक्षित है । वहां पर भी स्थापत्य व कला के कुछ बेनमून शिल्प हैं । वह नजारा भी बड़ा ही भव्य एवं विशालरुप लिए है ।

सुरक्षा, रख रखाव वगैरह को मद्दे नजर रखते हुए फिलहाल वह पूरा विभाग बंध रखा जाता है ।

शिखर तक बीच बीच में सहारे के रुप में केगर नामकी लकड़ी के खंभे टेढे-मेढे-तिरछे व सप्रमाणरुप में रखे गये है । इस लकड़ी की विशेषता है कि इशे जलाने पर धुएँ की बजाए इसमें से पानी टपकता है। वर्तमान में इसे तीर्थ का काफी विकास हुआ है ।

आणंदजी कल्याणजी पेढी के द्वारा तीर्थ की समग्र व्यवस्था सुचारु ढंग से चल रही है । आधुनिक सुविधाओं से संपन्न स्वच्छ व साफसुथरी

नई धर्मशालाओं की वजह से यात्रिकों को जरा भी परेशानी नहीं होती । जैन यात्रिक भाई बहनों के उपरांत भी बडी तादाद में अन्य लोग भी इस तीर्थ की यात्रा करने, जिनालय के शिल्प स्थापत्य को देखने व प्राकृतिक वातावरण का आनंद लेने आते रहते है । तारंगा के पर्वतीय शैक्षणिक या वन्य युक्त अभयारण्य को देखने आनेवाले गुजरात की स्कूलो के सैकड़ों बच्चें यात्रा के दौरान जिनमंदिर के दर्शनार्थ आते हैं ।

यहां पर सुविधा संपन्न भोजनशाला की व्यवस्था एक स्वतंत्र ट्रस्ट सम्हालाता है । भोजनशाला में केन्टीन व भाताखाता की व्यवस्था भी बहुत ही अच्छी तरह से होती है ।

तलहटी की उत्तरी दिशा में दो ढाई किलोमीटर पर तारणमाता का प्राचीन मंदिर भी है । श्वेत पाषाण में से निर्मित तारण देवी की प्रतिमा प्राचीन है । इसी के समीप एक गुफा में धारण माता का मंदिर भी निर्निर्मित है । इस में कुछ बौद्ध मूर्तियाँ बिराजमान है । वायव्य कोण में स्थित गुफा 'जोगीडा की गुफा' के नाम से प्रसिद्ध है । इस गुफा में बोधिवृक्ष के तले लाल पत्थर से निर्मित चार बुद्ध प्रतिमाए निर्मित है ।

प्रतिवर्ष कार्तिकी एव चैत्री पूर्णिमा के दिन यहां पर मेला लगता है।

आश्विन शुक्ला १० यहां के तीर्थ के मूलनायक भगवान अजितनाथ की प्रतिष्ठा का दिन है । यह दिन काफी धूम धाम से मनाया जाता है... इसी दिन मंदिर पर नई धजा चढायी जाती है । बारिश के दिनों में मेघराजा पूरे मंदिर के बाहरी हिस्सें को धो धो कर खिला खिला सा बना डालते हैं । तब इसे देखने का आनंद ही और होता ही । इसी तरह चांदनी रात में सुहानी चांदनी की रोशनी में नहाये हुए इस शिखरयुक्त मंदिर को देखना भी एक अद्‌भूत अनुभव है ।

यहां पर कोटिशिला, सिद्धशिला एवं मोक्ष बारी नामक ३ टूंके भी है ।

तीर्थ व्यवस्था, सलाह सूचन, दान-सहयोग, जीवदया, पांजरापोल, जीर्णोद्धार वगैरह प्रवृत्तियों के लिए पेढी के संपर्क सूत्र

शेठ आणंदजी कल्याणजी ट्रस्ट
श्रेष्ठि लालभाई दलपतभाई भवन,
२५, वसंतकुंज, नवा शारदा मंदिर रोड, पालडी, अहमदाबाद-३८० ०२७
फोन : (०७९) २६६४४५०२, २६६४५४३०
समय : सुबह ११ से १-३० व् दोपहर २ से ३-३०
Telefax : 079-266082441 • Email : shree_sangh@yahoo.com
(रविवार एवं अवकाश के अतिरिक्त)

शेठ आणंदजी कल्याणजी ट्रस्ट
पटनी की खड़की, झवेरीवाड, अहमदाबाद-३८० ००१
समय : सुबह ११ से १-३० व दोपहर २ से ३-३० तक
फोन : (०७९) २५३५६३१९
(रविवार एवं अवकाश के अतिरिक्त)

श्री कयवनभाई हेमेन्द्रभाई संघवी
विश्रुत जेम्स, ७०१-२ ए अमन चेम्बर्स ७वा माला,
ओपेरा हाउस, मुम्बई-४०० ००४
फोन : (०२२) ३२९६१८७०
समय : दोपहर १२ से ५ (अवकाश दिनों के अतिरिक्त)

शेठ आणंदजी कल्याणजी ट्रस्ट
श्री रजनीशांति मार्ग, पालीताणा-३६४ २७०
ओपेरा हाउस, मुम्बई-४०० ००४
Tele : 02848–252148, 253656
समय : सुबह ९ से १२.३० दोपहर २.३० से ७

और अंत में

आपको 'श्री आनंदकल्याण' का यह अंक अच्छा लगा ? क्या अच्छा लगा ? कुछ पसंद न भी आया हो तो वह भी हमें खुले मन से पर खुरदरी नहीं अपितु नरम कलम से लिख भेजें । हमें अवश्य अच्छा लगेगा । पत्रव्यवहार के लिए ई-मेईल माध्यम इच्छनीय एवं उपयुक्त रहेगा ।
anandkalyanmagazine@gmail.com

उद्देश्य

- ५०० वीं सालगिरह के प्रसंग में छोटी योजना द्वारा हर एक श्रावक-श्राविका को सहभागी बनने का अमूल्य अवसर।
- ५००वीं सालगिरह का अद्‌भूत एवम् अद्वितीय प्रसंग आयोजन।

यह फंड एवम् उसके व्याज का उपयोग कहाँ किया जायेगा ?

- यह फंड ट्रस्ट के "सुवर्ण महोत्सव अवसर पर आयोजित सर्व साधारण फंड" खाते में जमा होगें।
- इस कोर्पस फंड का व्याज का उपयोग सर्व साधारण खाते में जैसे कि सात क्षेत्र, जीवदया और अनुकम्पा ईत्यादि में आवश्यकता अनुसार किया जायेगा।
- राशि हर साल रु. ३६० या एक साथ रु. ५४०० दोनों विकल्प में जमा कर सकते है।
- **Anandji Kalyanji Pedhi** मोबाईल एप्लीकेशन के द्वारा ओनलाईन भी राशि जमा करा सकेंगे।

विशेष जानकारी हेतु संपर्क करे :
शेठ आणंदजी कल्याणजी, २५, वसंतकुंज, नवा शारदा मंदिर रोड,
पालडी, अमदावाद ३८०००७. फोन +९१-७९-२६६१०३८७
हेल्प लाईन नंबर : + 91-93 75 500 500, + 91-93 76 500 500

info@anandjikalyanjipedhi.org
www.anandjikalyanjipedhi.org
Social Presence
डाउनलोड करे Anandji Kalyanji Pedhi App

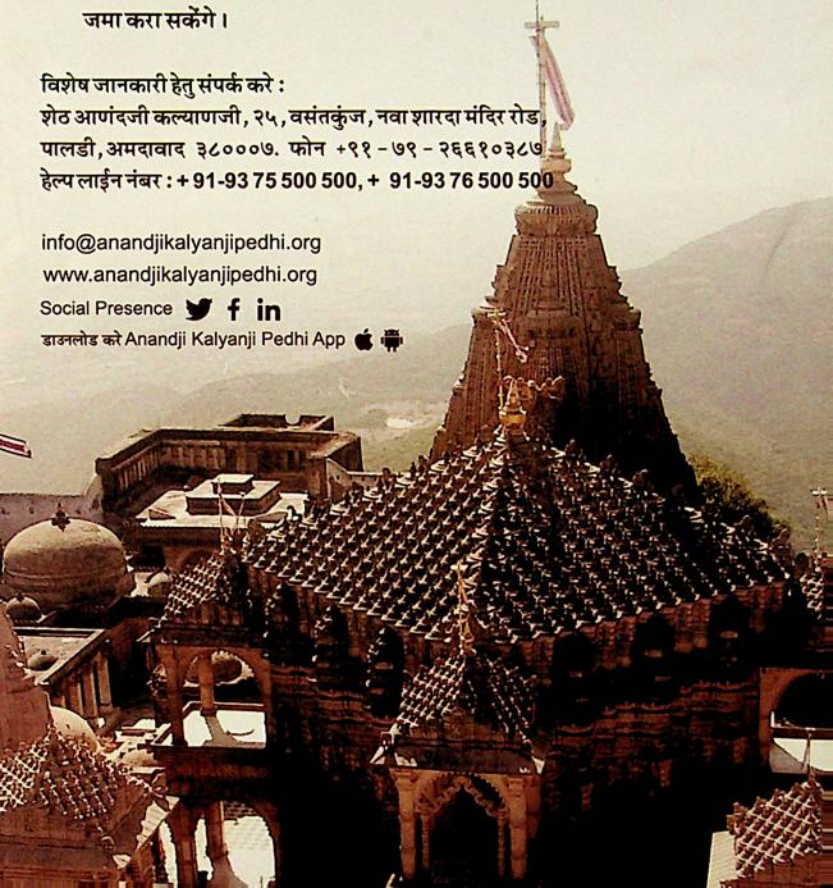

अंक-४

श्री शत्रुंजय तीर्थाधिपति

BOOK - POST

To,

श्री आनंद कल्याण (त्रिमासिक पत्र)

श्रेष्ठी लालभाई दलपतभाई भवन, २५, वसंतकुंज,
नवा शारदा मंदिर रोड, पालडी, अहमदाबाद - ३८० ००७.
E-mail : anandkalyanmagazine@gmail.com